छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. अजय कुमार शुक्ल
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
कला एवं मानविकी संकाय
कलिंगा वि.वि. नया रायपुर (छ.ग.)

शोध सारांश :–

लोकजीवन की अभिव्यक्ति लोकगीत है। यह लोक की बहुमूल्य धरोहर है। जिसमें लोकजीवन के विविध चित्र दिखलायी पड़ते हैं। भारतवर्ष में अनेक भाषा एवं बोलियां बोली जाती है। हिन्दी भाषा के अतंर्गत विभिन्न बोलियां प्रचलित हैं। जिसमें भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी बोली भी सम्मिलित है। इन दोनों क्षेत्रों में प्रचलित लोकगीतों के तुलनात्मक अध्ययन से सांस्कृतिक साम्यता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। यह सांस्कृतिक साम्यता ही हमारी गौरवशाली संस्कृति को समृद्ध करती है कि अलग भाषा या अलग बोली होने के बावजूद सांस्कृतिक एकता के चित्र समान है।

बीज शब्द :–

छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, लोकगीत, संस्कार गीत, गंगा गीत, देवी गीत, श्रृंगार गीत, बारहमासी, सुआ गीत, छठ गीत, नारी संवेदना, साम्यता।

प्रस्तावना :–

विश्व की प्राचीनतम संस्कृति में भारतीय संस्कृति का स्थान महत्वपूर्ण है। यह कहा जाना उचित होगा कि किसी भी राष्ट्र की पहचान वहाँ की लोकसंस्कृति से होती है। राष्ट्रीय संस्कृति का आधार ''लोक संस्कृति'' है। लोकगीत, लोकसंस्कृति का आधार होता है। लोकगीतों के माध्यम से ही हम भारतवर्ष की सामाजिक एवं सांस्कृतिक ताने बाने को महसूस कर सकते हैं।

भारतवर्ष में सैकड़ों भाषाएँ और बोलियां प्रचलित हैं। प्रत्येक भाषा और बोलियों के लोकगीत का विशेष महत्व होता है। इतिहास सम्मत है कि लोकगीतों में लोकसंस्कृति के साथ मानवीय संवेदनाए, हर्ष, उल्लास एवं विषाद के मौलिक चित्र दिखलाई पड़ते है। लोकगीतों में मानव मन के सुःख–दुःख, सहमति–असहमति, आकांक्षा, व्यंग्य के साथ विरोध और विद्रोह की अभिव्यक्ति को साफ महसूस किया जा सकता है। मानवीय संवेदना के विभिन्न भाव की लोकगीतों में अभिव्यंजना रहती है। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोधपत्र में ''छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी बोली का पारस्परिक संबंध :–

विश्व में सबसे अधिक प्रचलित भोजपुरी बोली है। भोजपुरी बोली का नामकरण बिहार प्रांत के भोजपुर जिले के नाम पर पड़ा है। यह सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी बोली जाती है। इस बोली का मूल क्षेत्र बिहार, उत्तरप्रदेश और झारखंड है किंतु भारतवर्ष के लगभग सभी प्रांतों में भोजपुरी बोलने वालों की अच्छी संख्या हैं। यह आर्यभाषा परिवार की बिहारी हिन्दी उपभाषा के अतंर्गत आती है। एक अनुमान के मुताबिक भोजपुरी बोली पांच करोड़ से अधिक लोगो की मातृभाषा है। इसी प्रकार भारतवर्ष के मध्य में छत्तीसगढ़ राज्य स्थित है। छत्तीसगढ़ में बोली जाने वाली भाषा को छत्तीसगढ़ी बोली के नाम से जाना जाता है। विकिपीड़िया के अनुसार छत्तीसगढ़ी दो करोड़ लोगो की मातृभाषा है। यह आर्यभाषा परिवार के पूर्वी हिन्दी उपभाषा के अतंर्गत आती है। भारतवर्ष में जब अंग्रेजो का शासन था, तब बिहार, उड़ीसा और छत्तीसगढ़ के अधिकांश भाग बंगाल प्रेसीड़ेंसी के छोटा नागपुर क्षेत्र में सम्मिलित थे। आज भी छत्तीसगढ़ प्रदेश की उत्तरी सीमा झारखंड प्रदेश (अविभाजित बिहार) से स्पर्श करती है। इन दोनो क्षेत्रों में निवासरत जनता की भाषा, संस्कृति, परंपरा, रीति–रिवाज एवं रहन–सहन में सांस्कृतिक एकता स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ती है। इसीलिए यहां प्रचलित लोकगीतों में भी अनेक भावों में समानता दिखलाई पड़ती है।

भोजपुरी एवं छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में साम्यता :–

भारतवर्ष एक ग्राम प्रधान देश है। छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी बोलने वाली बहुसंख्यक जनता गांव में निवास करती है। भारतीय लोक मानस में संस्कार गीतों का विशेष महत्व है। जीवन की प्रमुख घटनाएँ संस्कार के रूप में मनायी जाती है। जन्म से मृत्यु तक विभिन्न संस्कार किए जाते हैं। हिन्दु धर्म परंपरा में सोलह संस्कारो की विशेष भूमिका होती है किन्तु जन्म, विवाह एवं मृत्यु संबंधी संस्कार ज्यादा लोकप्रिय है। छत्तीसगढ़ एवं भोजपुरी क्षेत्र की लोक जनता भी इन संस्कारों से आबद्ध है। इस अवसर पर यहाँ की जनता खुशी पूर्वक गीत गाती है और नृत्य करती है। बच्चे के जन्म के साथ ही सबसे लोकप्रिय गीत सोहर गाया जाता है–

सोहर गीत–

दस महीना जब लागै,
जन्में लाल कन्हैया हो ललना।
बाजत है आनंद बधैंया,
सखिमन मंगल गावै हो।। **(छत्तीसगढ़ी)**

जुग जुग जिअसु बबुनवां, भवना के भाग जागत हो,
ए लललला बबुआ होइहें कुलवा के दीपक।
मनवा में आस जागल हो,

आजु के दिनवा सोहावन, रतिया लोभावन हो। **(भोजपुरी)**

जन्म के उपरांत छोटा बच्चा सबका प्रिय होता है। उसे मीठी–मीठी थपकी देकर सुलाने के लिए लोरी गीत को गाया जाता है। सामान्य तौर से लोरी गीत में छोटी–छोटी कहानियां रहती है। मधुरता से सराबोर इन गीतों को सुनकर छोटे बच्चे निद्रा में लीन हो जाते है। छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी क्षेत्र में लोरी के कई गीत प्रचलित है–

लोरी–

आ जा रे निंदियां आ जा रे।
तोला नोनी ह बोलाथे, आ जा रे।।
सुति जावे नोनी तै सुति जावे ओ।
झै रोवे नोनी मोर, झै रोवे ओ।। **(छत्तीसगढ़ी)**

आव आव गे फुदों चिरैया, अण्डा पारी–पारी जो गे।
तोहरा अण्डा आगिन लागौ, नुनु आँखी नीन गे।। **(भोजपुरी)**

भारतीय लोक जीवन में जन्म संस्कार के बाद सबसे महत्वपूर्ण संस्कार विवाह है। विवाह के विभिन्न रस्मों में विभिन्न पारंपरिक लोकगीत प्रचलित है। छत्तीसगढ़ एवं भोजपुरी क्षेत्र में उन विभिन्न रस्मों में गाए जाने वाले में साम्यता स्पष्ट रूप से दिखलायी पड़ती है–

मटकोर–

तोला माटी कोड़े ल नइ आवे सुआसा धिरे धिरे।
दही के भोरा कपसा लिहेन धीरे धीरे।। **(छत्तीसगढ़ी)**

कहवां के पियर माटी, कहवां के कुदार हे।
कहवां के पाँच सुहागिन, माटी कोड़े जात हे।। **(भोजपुरी)**

हल्दी–

एक तेल चढ़ि गे हो हरियर हरियर।
मड़व म दुलरू तोर बदन कुम्हिलाए।।
कौन चढ़ाये तोर तन मा रे हरदी।
ओ कौन देवै अचरा के छांव।।
फूफू चढ़ावे तोर तन मा रे हरदी।
और दाई देवै अंचरा के छांव।। **(छत्तीसगढ़ी)**

बाबा हो जनक बाबा, धन्न रउआ बानी जी।

कहिया के हरदी संचले रउआ बानी जी।।
हमरो सिया बेटी, अति सुकुंवार जी।
हलदी के रच बसे, जनि कुम्हालाए जी।। **(भोजपुरी)**

विदाई गीत–

दाई तोला रोवै नोनी हरर हरर ओ।
ददा रोवै गंगा बोहावे।
भइया तोला रोवै नोनी भींजे पिछौरी।। **(छत्तीसगढ़ी)**

काहे के दुधवा पियवल ए बाबा, काहे के कइल दुलार ए।
जानते तु रहल बाबा धिवया परायी, लगली सुनर वर का साथ।। **(भोजपुरी)**

इसी प्रकार भारतवर्ष में गंगा नदी पवित्रता की पर्याय मानी जाती है। इसके पौराणिक और धार्मिक महत्व को देखते हुए हिन्दू धर्म में उसे देवी के रूप में पूजा जाता है। भारतीय लोकमानस में इस नदी और उसके जल पर विशेष आस्था रही है। छत्तीसगढ़ एवं भोजपुरी लोकगीतों में गंगाजल और गंगानदी पर केन्द्रित अनेक लोकगीत प्रचलित है। जो विभिन्न पर्व एवं त्योहारों पर गाए जाते है–

गंगा गीत–

देवी गंगा, लहर तुरंगा।
तुहरे लहर परभू भीजो आठो अंगा।
अहो देवी गंगा।। **(छत्तीसगढ़ी)**

अरे गंगा बहे, जमुना बहे।
सरजू बहे, तीनो तिरबेणी बहे।।
ताही घटिया उतरेले महादेव,
अपनी लगनीया लिहले।
ताही घटिया उतरेले महादेव,
अपनी लगनीया लिहले।।

अरे घाट मोरे छेकेले,
घटवरिया लोग,
अवरू बजरिया लोग। **(भोजपुरी)**

ग्रामीण समाज में पूजा–पाठ एवं पवित्रता का बहुत महत्व है। किसी भी त्यौहार में जमीन को गाय के गोबर से लीपना शुद्ध एवं पवित्र माना जाता है। छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी लोकगीतों में यह लोकगीत बहुत लोकप्रिय है–

सुरहिन गइया के गोबर मंगाले ओ,
हाय, हाय मोर दाई खूंट धर अंगना लिपा ले ओ,
खूंट धर अंगना लिपा ले ओ,
हाय, हाय मोर दाई मोतियन चौंक पुरा ले ओ,
मोतियन चौंक पुरा ले ओ। **(छत्तीसगढ़ी)**

गंगा जी से मटिया मंगवले बानी,
देवघर लिपवले बानी हो
मइया मोरी, लाले पियरे आसनी लगवले बानी,
रउआ के बोलवले बानी हो। **(भोजपुरी)**

ग्रामीण परिवेश में शक्तिस्वरूपा माँ दुर्गा का विशेष महत्व है। उनकी पूजा करते हुए महिलायें कह रही है कि आपकी आराधना में कोई भूल–चूक हो जाए तो हमें माफ करना–

एक पतरी रयनी भयनी,
राय रतन ओ दुरगा देवी।
तोरे शीतल छांय,
चौकी चंदन पिढुली।
गऊरी के होथय मान,
जइसे गऊरी ओ मान तुम्हारे।
कोरवन जइसे धार,
कोरवन असन डोहरी।
बरस ससलगे डार।। **(छत्तीसगढ़ी गौरा–गौरी गीत)**

लाली रे चुनरिया में,
बड़ी मुसकाली मइया सातों एक बार,
डोलियाँ चढ़ के अइले माई,
बघवा बनल बा कहार,
देवी मइया.....
करिह भूल–चूक माफ,
हम हई बालक तोहार। **(भोजपुरी देवी गीत)**

श्रृंगार रस रसराज की उपमा से सुशोभित है। श्रृंगार रस के संयोग और वियोग पक्ष के भाव लोकगीत में अभिव्यंजित होती है। जहाँ वेदना का भाव है तो वहीं प्रेम का भाव भी दृष्टिगोचर होता है। प्रेम एक सार्वभौमिक भाव है जो सृष्टि में मनुष्य की उत्पत्ति से जुड़ा हुआ है जिसमें मधुर अनुभूतियां उत्पन्न होती है–

श्रृंगार वर्णन–

छाते बत्तीसी नयन कजरा।
पाये म घुंघरू गले म गजरा।।
नके नथुनिया रे गूंज भारी।
सपना म सपनाये दोसदारी।। **(छत्तीसगढ़ी)**

तू देख जनि चान, हमरा चान लागे लू।
मचा देबू कहियो तूफान लागे लू।।

मत करिह सिंगार, मिली ओरहन हजार,
लोहके देखे खातिर मेला में हो जायी,
मार रूप के तू बड़हन दुकान लागे लू। **(भोजपुरी)**

हिन्दी साहित्य में बारहमासी का प्रचलन आदिकाल से दिखलायी पड़ता है। निश्चित रूप से इस परम्परा का मूल स्त्रोत लोकगीत ही है। लोकगीतों में नायक के वियोग में नारी विभिन्न महीनों के बदलने परिवेश में अपने मनोभाव को व्यक्त करती है। भोजपुरी भाषी क्षेत्र और छत्तीसगढ़ में पलायन एक मुख्य समस्या है। जिसमें नायक को अपने जीविकोपार्जन के लिए पैसा कमाने परदेश जाना पड़ता है। नायक के वियोग में बारहों महीने के बदलते परिवेश में नायिका की अनुभूति बारहमासी में स्पष्ट रूप से दिखलायी पड़ता है–

बारहमासी–

आसाढ़ माह ब्रिज लागत ललिता।
चहुं दिसि बादल पावे।।
तोर पपिहा द्रोहिल बोले।
मोला दादुल वचन सुनावै।। **(छत्तीसगढ़ी)**

प्रथम मास असाढि सखि हो,
गरज गरज के सुनाय।
सामी के अईसन कठिन जियरा,
मास असाढ नहि आय।।

सावन रिमझिम बुनवा बरिसे,
पियवा भिजेला परदेस।
पिया पिया कहि रटेले कामिनि,
जंगल बोलेला मोर।। **(भोजपुरी)**

तोता को 'सुआ' या 'सुगा' नाम से संबोधित किया जाता है। भारतीय साहित्य में प्रेमी–प्रमिका के बीच संदेश ले जाने वाले संदेशवाहक के रूप में तोते (सुआ) का जिक्र होता रहा है। यह मनुष्य की बोली की नकल करने में उस्ताद होता है। अधिकांश घरों में पालतू पक्षी के रूप में भी यह मनुष्य के सबसे करीब रहा है। विशेषतौर से यह नारियों का भी प्रिय पक्षी रहा है। जिसके सामने नारी अपने मन की व्यथा को व्यक्त करती रही हैं। छत्तीसगढ़ी सुआगीतों में महिलाएं व्यंग्य के साथ अपनी दुःखद स्थिति को अभिव्यक्त करती है:–

तरी नरि ना ना ओ सुआ ओ,
तरी नरि ना ना ओ सुआ ओ,
तिरिया जनम झन देबे,
तिरिया जनम मोर गऊ को बरोबर
गऊ के बरोबर,
रे सुआ ना
तिरिया जनम झन देबे,
सती सुलोचना रोवथे ओ,
तरिया तीरे
तरिया तीरे
तिरिया जनम झनि देबे.....**(छत्तीसगढ़ी सुआ गीत)**

केरवा जे फरेला घवद से,
ओह पर सुगा मेड़राय,
उ जे खबरी जनइबो अदिक (सूरज) से,
सुगा देले जुठियाए,
उ जे मरबो रे सुगवा धनुक से,
सुगा गिरे मुरझाय,
उ जे सुगनी जे रोए ले वियोग से,
आदित होइ ना सहाय,
देव होइ ना सहाय। **(भोजपुरी छठ गीत)**

जेहे कोखे बेटा जनमल, सेहे कोखे बेटियाँ

काहे करेल हो बाबूजी, दु रंग नीतियाँ
बेटा के पढ़ावे खातिर स्कूल भेजवले,
हमर बेरिया, काहे झाड़ू लगावले,
काहे करेल हो बाबूजी, दु रंग नीतियाँ। **(भोजपुरी पारंपरिक गीत)**

भारतीय समाज में स्त्रियों को मर्यादा के नाम पर सामाजिक बंधनों से जकड़ा गया है। संस्कृति, संस्कार एवं परंपराओं के नाम पर उसकी आकांक्षाओं को हमेशा कुचला जाता रहा हैं। इन लोकगीतों के माध्यम से नारी मन की व्यथा को स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है। जहाँ जन्म से लेकर मृत्यु तक उनके साथ भेद–भाव किया जाता रहा है:–

''कुस ओढ़न कुस डासन बन फल भोजन रे,
ए ललना सुखुड़ी के जरेला पँसगिया निनरियौ ना आवेला रे।''.....**(भोजपुरी गीत)**

छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी क्षेत्रों में जीविकोपार्जन के लिए पुरूषों का पलायन एक बहुत बड़ी समस्या है। घर में पुरूषों की अनुपस्थिति से महिलाओं को अनेको कष्ट का सामना करना पड़ता है। परदेश गए पति को लोकगीतों के माध्यम से उलाहना देने का स्वर सुना जा सकता है:–

तोहरो जे मैया प्रभु हो आवारी छिन्नरिया हो,
तौली नापिये तेलवा दिहला हो राम,
तोहरो बहिनिया प्रभु हो आवारी छिन्नरिया हो,
लोई गनिये हाथवा के दिहलां हो राम.....**(भोजपुरी गीत)**

छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी लोकगीतों में नारी मन की संवेदना स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ती है। जहाँ पर हर्ष, उल्लास, व्यंग्य एवं दुःखों की सहज अभिव्यक्ति है। पुरूष प्रधान समाज में नारी व्यंग्य के साथ प्रतिकार करती हुई दिखलाई पड़ती है। बाल–विवाह, अनमेल–विवाह, बेटा–बेटी में असमानता, पुरूषों का तानाशाही रवैया और जीविकोपार्जन के लिए पति का महानगरों में पलायन के चित्र भी दिखलाई पड़तें है। पति के पराई स्त्री के मोहपाश में बंधने का संशय एवं विभिन्न तीज–त्यौहार में पति के साथ नहीं होने का दुःख, सास–ससूर के ताने आदि के चित्र लोकगीतों में स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ता है। लोकगीतों के माध्यम से महिलाएँ तीज–त्यौहारों में खुशियाँ मनाती है। पुत्र–पुत्री के जन्म में सोहर गाती है। मांगलिक उत्सव में संस्कार गीत गाती है। साथ ही सामाजिक कुप्रथाओं जैसे– शराबखोरी, जूआँ एवं अनाचार पर प्रतिकार करती है।

उपसंहार :–

उपर्युक्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि छत्तीसगढ़ी एवं भोजपुरी लोकगीतों में सांस्कृतिक समानता है। मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न संस्कार गीतों के भाव में साम्यता के साथ–साथ यहाँ पर धार्मिक, पौराणिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित समान भाव के लोकगीत प्रचलित है। पर्व, त्यौहार एवं मांगलिक अवसरों पर गाये जाने वाले लोकगीतों में पलायन, नारी संवेदना एवं श्रृंगार भावना पर आधारित लोकगीतों में पर्याप्त साम्यता है। जिसमें जीवन के विविध चित्र दिखलाई पड़ते है। भारतवर्ष की गौरवशाली संस्कृति और राष्ट्रीय एकीकरण में इस सांस्कृतिक समानता का बहुत महत्व है।

संदर्भ स्त्रोत :–

1. डॉ. सत्यभामा आड़िल– छत्तीसगढ़ भाषा और संस्कृति, विकल्प प्रकाशन, रायपुर (छ. ग.)।
2. डॉ. शकुन्तला वर्मा– छत्तीसगढ़ी लोक–जीवन और लोकसाहित्य का अध्ययन, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद (उ. प्र.)।
3. दयाशंकर शुक्ल– छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य का अध्ययन, वैभव प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.)।
4. श्री कृष्ण देव उपाध्याय– भोजपुरी लोकगीत, (भाग 1), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग (उ. प्र.)।
5. श्री कृष्ण देव उपाध्याय– भोजपुरी लोकगीत, (भाग 2), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग (उ. प्र.)।
6. श्री कृष्ण देव उपाध्याय– भोजपुरी लोकगीत, (भाग 3), भोजपुरी एकेदमी, पटना।
7. शंकर सेन गुप्ता– भारतीय लोक संस्कृति अध्ययन, इंडियन पब्लिकेशन, कलकत्ता।
8. संपादक – निराला बिदेसिया– लोकराग गीतमाला, (ई–पुस्तिका)।
9. डॉ. अजय कुमार शुक्ल – समकालीन हिन्दी कविता में लोकतात्विक प्रवृत्तियों का अध्ययन, शोध प्रबंध, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ. ग.)।
10. डॉ. अजय कुमार शुक्ल – मड़वा की रौनक, lok-sagar.blogspot.com
11. स्मिता तिवारी– उत्तर भारत के लोकगीत, ड्यूक विश्वविद्यालय, (यू. के.)।
12. गुरतुर गोठ– ई–पत्रिका।
13. कविता कोश– ई–पत्रिका।